IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन (म.प्र.)

मुरैना जिले के राजवंशों का ऐतिहासिक विवेचन

शोधार्थी

कमलेश बैरवा, रूपलाल अहिरवार

शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन (इतिहास विभाग)

सारांश

मुरैना जिला चंबल अंचल का प्रमुख ऐतिहासिक क्षेत्र है, जहाँ प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक राजवंशों का प्रभाव रहा। इन राजवंशों ने न केवल राजनीतिक सत्ता स्थापित की बल्कि कला, संस्कृति, धर्म एवं स्थापत्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शोध पत्र में मुरैना जिले के प्रमुख राजवंशों के ऐतिहासिक विकास, शासन प्रणाली तथा सांस्कृतिक प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: मुरैना, राजवंश, कच्छपघात, प्रतिहार, सिंधिया, इतिहास, चंबल

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश का मुरैना जिला प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यह क्षेत्र चंबल नदी के किनारे स्थित होने के कारण सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। प्राचीन काल में यह क्षेत्र विभिन्न जनजातीय एवं राजवंशीय शक्तियों का केंद्र रहा। समय-समय पर अनेक राजवंशों ने यहाँ शासन स्थापित किया तथा अपने राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव को सुदृढ़ किया। मुरैना के बटेश्वर मंदिर समूह, पदावली दुर्ग तथा मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर इस क्षेत्र की गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहर के प्रमाण हैं।[1]

- **शोध उद्देश्य**
- मुरैना जिले के प्रमुख राजवंशों का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
- राजवंशों के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषण करना।
- स्थापत्य एवं धार्मिक विकास में राजवंशों की भूमिका का अध्ययन करना।
- मुरैना की ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व को स्पष्ट करना।
- **शोध विधि**

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। ऐतिहासिक ग्रंथों, पुरातात्विक अभिलेखों, शोध पत्रों तथा संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन कर तथ्य संकलित किए गए हैं।

- **मुरैना जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

मुरैना क्षेत्र प्राचीन काल में "मयूरवन" नाम से प्रसिद्ध था। यह क्षेत्र महाभारत कालीन इतिहास से भी जुड़ा हुआ माना जाता है। चंबल नदी के बीहड़ इस क्षेत्र को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करते थे, जिसके कारण विभिन्न राजवंशों ने इसे सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना। गुप्तकाल के बाद यहाँ अनेक क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ।[2]

- **नागवंश का शासन**

मुरैना क्षेत्र में प्रारंभिक काल में नागवंशीय शासकों का प्रभाव रहा। नागवंश ने मध्य भारत में अपनी राजनीतिक शक्ति स्थापित की थी। इनके शासनकाल में शिव एवं शक्ति उपासना का व्यापक प्रचार हुआ। मुरैना जिले में प्राप्त प्राचीन शिव मंदिर एवं मूर्तियाँ नागवंशीय कला शैली को प्रदर्शित करती हैं। नागवंशीय शासकों ने स्थानीय प्रशासन को मजबूत किया तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित की।[3]

नागवंशीय शासन में धार्मिक सहिष्णुता दिखाई देती है। इस काल में वैदिक धर्म के साथ-साथ जैन एवं बौद्ध धर्म का भी प्रभाव रहा। पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त अभिलेख इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मुरैना क्षेत्र उस समय सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र था।[4]

- **प्रतिहार राजवंश का प्रभाव**

आठवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य गुर्जर-प्रतिहार राजवंश का प्रभाव मुरैना क्षेत्र में स्थापित हुआ। प्रतिहार शासकों ने अरब आक्रमणों का प्रतिरोध किया तथा उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुरैना क्षेत्र में प्रतिहारों ने अनेक दुर्गों एवं मंदिरों का निर्माण कराया।[5]

प्रतिहार काल में स्थापत्य कला का विशेष विकास हुआ। मंदिर निर्माण शैली में अलंकरण, स्तंभ निर्माण तथा मूर्तिकला का उत्कृष्ट रूप दिखाई देता है। मुरैना के आसपास स्थित प्राचीन मंदिरों में प्रतिहार शैली के अवशेष आज भी विद्यमान हैं।[6]

- **कच्छपघात राजवंश का उत्कर्ष**

मुरैना जिले के इतिहास में कच्छपघात राजवंश का विशेष महत्व है। यह राजवंश 10वीं से 12वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली रहा। कच्छपघात शासकों ने ग्वालियर एवं मुरैना क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की। इनके शासनकाल में स्थापत्य कला एवं धार्मिक गतिविधियों का अत्यधिक विकास हुआ।[7]

मुरैना का प्रसिद्ध बटेश्वर मंदिर समूह कच्छपघात कालीन स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण है। इन मंदिरों का निर्माण मुख्यतः शिव, विष्णु एवं देवी उपासना के लिए किया गया था। मंदिरों की स्थापत्य शैली में नागर शैली की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।[8]

मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर भी कच्छपघात शासकों की स्थापत्य प्रतिभा का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह गोलाकार संरचना भारतीय वास्तुकला की अद्वितीय धरोहर मानी जाती है। कहा जाता है कि भारतीय संसद भवन की संरचना पर भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है।[9]

- **तोमर राजवंश का योगदान**

तोमर शासकों ने ग्वालियर एवं उसके आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया, जिसका प्रभाव मुरैना जिले पर भी पड़ा। तोमर शासकों ने कला एवं संगीत को संरक्षण प्रदान किया। राजा मानसिंह तोमर के काल में सांस्कृतिक गतिविधियों का विशेष विकास हुआ।[10]

तोमर काल में दुर्ग निर्माण एवं सैन्य संगठन को मजबूत किया गया। इस समय क्षेत्र में प्रशासनिक सुधार भी किए गए। स्थानीय स्तर पर राजस्व व्यवस्था को व्यवस्थित किया गया, जिससे आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला।[11]

- **मुगल शासन और मुरैना**

मुगल काल में मुरैना क्षेत्र आगरा एवं ग्वालियर प्रशासनिक इकाइयों के अंतर्गत आता था। मुगल शासकों ने इस क्षेत्र में प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित किया तथा कर व्यवस्था को संगठित किया। चंबल क्षेत्र के बीहड़ों के कारण यहाँ विद्रोही गतिविधियाँ भी होती रहीं।[12]

मुगल शासन के दौरान व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। हालांकि स्थानीय राजपूत शक्तियों एवं जमींदारों का प्रभाव भी बना रहा। मुगल स्थापत्य शैली का प्रभाव कुछ इमारतों एवं किलों में दिखाई देता है।[13]

- **सिंधिया राजवंश का शासन**

अठारहवीं शताब्दी में मराठा शक्ति के उदय के साथ सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर राज्य की स्थापना की। मुरैना क्षेत्र सिंधिया शासन के अधीन आ गया। सिंधिया शासकों ने प्रशासनिक सुधारों के साथ-साथ शिक्षा एवं संचार व्यवस्था के विकास पर भी ध्यान दिया।[14]

सिंधिया शासनकाल में सड़क मार्गों का विकास हुआ तथा राजस्व व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया गया। अंग्रेजों के साथ संधियों के बाद यह क्षेत्र ग्वालियर रियासत का हिस्सा बना रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात मुरैना जिला मध्यभारत राज्य एवं बाद में मध्यप्रदेश में सम्मिलित किया गया।[15]

- **सांस्कृतिक एवं स्थापत्य योगदान**

मुरैना जिले के विभिन्न राजवंशों ने स्थापत्य कला को समृद्ध किया। बटेश्वर मंदिर समूह, पदावली दुर्ग, मितावली मंदिर तथा प्राचीन शिवालय इस क्षेत्र की स्थापत्य धरोहर हैं। इन स्मारकों में भारतीय नागर शैली, मूर्तिकला एवं धार्मिक प्रतीकों का उत्कृष्ट समन्वय दिखाई देता है।[16]

इन राजवंशों ने धार्मिक सहिष्णुता को भी बढ़ावा दिया। शिव, विष्णु, शक्ति एवं जैन धर्म से संबंधित मंदिरों का निर्माण यह दर्शाता है कि मुरैना क्षेत्र सांस्कृतिक विविधता का केंद्र था।[17]

निष्कर्ष

मुरैना जिले का इतिहास विभिन्न राजवंशों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से समृद्ध रहा है। नागवंश, प्रतिहार, कच्छपघात, तोमर, मुगल एवं सिंधिया राजवंशों ने इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से कच्छपघात राजवंश का स्थापत्य योगदान भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। मुरैना जिले की ऐतिहासिक धरोहरें आज भी भारतीय संस्कृति एवं कला की गौरवशाली परंपरा को प्रदर्शित करती हैं। अतः इन धरोहरों का संरक्षण एवं अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. हरिहर निवास द्विवेदी, ग्वालियर राज्य का इतिहास, आगरा प्रकाशन ,पृ. 112
2. रामकुमार शर्मा, मध्यप्रदेश का इतिहास, हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृ. 89
3. के.डी. वाजपेयी, भारतीय प्राचीन इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 156
4. आर.सी. मजूमदार, प्राचीन भारत, पृ. 201
5. सत्यकेतु विद्यालंकार, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, दिल्ली,पृ. 278
6. भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय कला और संस्कृति, वाराणसी उत्तर प्रदेश पृ. 310
7. हरिहर निवास द्विवेदी, ग्वालियर के तोमर, पृ. 92
8. एलेक्जेंडर कनिंघम, Archaeological Survey of India Report, Vol. II, पृ. ग्वालियर, पृ.145
9. एम.बी. गर्दे, ग्वालियर राज्य पुरातत्व रिपोर्ट, पृ. 54
10. आर.वी. सोमानी, राजस्थान का इतिहास, पृ. 344
11. एस.एल. नागोरी, मध्यकालीन भारत का इतिहास, जयपुर पृ. 228
12. जदुनाथ सरकार, मुगल साम्राज्य का इतिहास, पृ. 176
13. इरफान हबीब, मध्यकालीन भारत, पृ. 241
14. जी.एस. सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, पृ. प्रकाशन मुंबई ,412
15. बी.एल. ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ. नई दिल्ली, पृ.198
16. कृष्णदत्त वाजपेयी, भारतीय स्थापत्य कला, पृ. 367
17. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन ,नई दिल्ली पृ. 255